किताब से निकलकर प्रेम कहानी

कमलेश्वर साहू

'किताब से निकलकर प्रेम कहानी' जिन्दगी में आने पर
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दो काम करती है। एक तरफ अपने सपनों का मनोरम संसार बसाती है, दूसरी तरफ रुढ़ी, व्यवसाय और स्वार्थ की ताकतों का आक्रमण झेलती है। दोनों बातें अक्सर एक-दूसरे की पूरक होती हैं। हो सकता है जिन्दगी में स्वप्न रचने और आक्रमण सहने वाली 'प्रेम कहानियाँ' समानांतर चलती हों, लेकिन कवि की दृष्टि समावेशी होती है। वह दोनों तरह के सत्य से अपना काव्यानुभव निर्मित करता है, सच तो यह भी है कि जितना बड़ा संघर्ष होता है, उतना बड़ा स्वप्न जन्म लेता है। कोई भी जिम्मेदार कवि इसी प्रक्रिया में अपना रचना संसार निर्मित करता है। उसकी सफलता-असफलता का निर्णय बहुत सी दूसरी बातों पर निर्भर होता है। कमलेश्वर साहू ने अपने नये काव्य संग्रह 'किताब से निकलकर प्रेम कहानी' में यही प्रयत्न किया है इसलिए उनकी कविताएँ आकर्षक हैं और वे अपनी पहचान बना पाते हैं। प्रकटतः एक-दूसरे के विरोधी मालूम होने वाले ऐसे ही अनुभवों से कमलेश्वर साहू ने अपनी कविता का ताना-बाना बुना है। यहाँ एक सिरे पर 'तवायफ' है जिसके नृत्य, संगीत, सौंदर्य के ग्राहक बहुत होते हैं लेकिन कोई भी इस मर्म तक नहीं पहुँचता कि "जो वह सुन रहा है/सारंगी की आवाज नहीं/मेरी सिसकियाँ हैं"। दूसरे सिरे पर सुनीता वर्मा हैं जो 'जीवन का सौंदर्य' रचते हुए 'सौंदर्य का जीवन' रचती हैं, इन दो सिरों के बीच मनुष्य के और रिश्ते हैं—माँ, पत्नी, प्रेमिका, बहन इत्यादि।

कवि के पास इन सभी के लिए गहरी आत्मीयता और सहानुभूति है। यही कारण है कि कलमेश्वर साहू की कविताएँ एक तरफ भरे-पूरे जीवन का दृश्य पेश करती हैं, दूसरी तरफ जीवन के प्रति लगाव और विश्वास प्रकट करती हैं। उनकी यह दृष्टि मानवीय और नैतिक को सौंदर्यात्मक और सर्जनात्मक विधान में पिरोने का संघर्ष करती हैं, जहाँ से कवि-कर्म की भावी राह फूटती है।

कमलेश्वर साहू ठेठ स्थानीयता के कवि हैं। छत्तीसगढ़ उनके अनुभव की धुरी है। वह उनकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
शेष अगले फ्लैप पर

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Poetry

अग्निशेखर जी को सप्रेम

02.04.11

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किताब से निकलकर प्रेम कहानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किताब से निकलकर प्रेम कहानी

(कविता-संग्रह)

कमलेश्वर साहू

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No....5166....
Dated....28/12/23

यश पब्लिकेशन्स
दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान के सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक : यश पब्लिकेशन्स
1/10753 सुभाष पार्क, गली नं. 3
नवीन शाहदरा नीयर कीर्ति मन्दिर,
दिल्ली-110032 फोन : 09899938522
Email : yash_publication@hotmail.com
visit us:www.yashpublications.com

© : प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान, छत्तीसगढ एफ-3,
छगमाशिम, आवासीय परिसर, पेंशनवाड़ा, रायपुर

ISBN : 978-93-81130-02-5

प्रथम संस्करण : 2011

मूल्य : 230/=

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमा राबिन्सन

के

लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

खण्ड–एक

1. समाचार वाचिकाएं 11
2. रंगों की बारिश में भीगी हुई 15
3. पुरूष–दृष्टि – एक 20
4. पुरूष–दृष्टि – दो 21
5. ऐसा क्यों 22
6. मां की याद 23
7. मुझे नहीं मालूम खुदाबख्श 24
8. तवायफ 26
9. तस्वीर में मौजूद तितली 28
10. मठ में लड़कियां 29
11. सुबह की धूप 32
12. बहन की बिदाई 33
13. मुनिया की मासूम आंखें 34
14. पिता की मृत्यु के बाद पूनम 35
15. जांता 39
16. सिलाई मशीन 41
17. रसोईघर – एक 44
18. रसोईघर – दो 47
19. जिन्दगी के शेष दिन 49
20. ममता दादौरिया दहेज हत्याकांड 50
21. जवान हो रही लडकी – एक 57
22. जवान हो रही लड़की – दो 58
23. जवान हो रही लडकी – तीन 59
24. जवान हो रही लड़की – चार 60

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

25. जवान हो रही लड़की – पांच 61
26. जवान हो रही लड़की – छः 62
27. जवान हो रही लड़की – सात 63
28. लड़की 64
29. बलात्कार कथा का अंत 66
30. स्त्री--पुरूष 72
31. स्त्री 82
32. पीपल 83
33. गठरी 84

खण्ड– दो

34. चित्रकार 89
35. ऐसा पहली बार हुआ 90
36. प्रेमिकाएं 92
37. प्रेम करने वाली लड़की 94
38. फूल खुश्बू चांद नहीं होना मुझे 96
39. परिसंवाद का माध्यम 98
40. प्यार के इस क्षण में तुम मुझे 99
41. कभी 100
42. कुछ इस तरह 101
43. दृश्य में चुंबन 102
44. ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठकर प्रेम करना 103
45. तुमसे प्रेम करते हुए – एक 105
46. तुमसे प्रेम करते हुए – दो 106
47. तुमसे प्रेम करते हुए – तीन 108
48. तुमसे प्रेम करते हुए – चार 109
49. उसे बताना चाहता था मैं 110
50. आवाज – एक 111
51. आवाज – दो 113
52. आवाज – तीन 114
53. किताब से निकलकर प्रेम कहानी 115
54. सजा 117
55. विवाहित पुरूष से प्रेम करने वाली लड़की 118
56. प्रेम 122

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खण्ड-एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समाचार वाचिकाएं

खबरों के बाजार में लगभग
उत्पाद के समान मौजूद होती हैं वे
उनके हिस्से का दुख व अंधेरा
दिखाई नहीं देता हमें

वे देश दुनिया की खबरों को बांचते हुए
आश्चर्य के समान मौजूद होती हैं
हमारे सामने–
टी. वी. के पर्दे पर

वे आंकड़ों, अटकलों,
उत्सुकताओं, जिज्ञासाओं,
संभावनाओं, नतीजों का
बाजार फैलाकर रख देती हैं
हमारे सामने
हमारी इच्छा या अनिच्छा जाने बगैर

देश दुनिया की
छोटी बड़ी घटनाओं पर
गड़ी हुई उनकी निगाहें
देख भी पाती होंगी या नहीं
अपने आसपास की
अपने घर परिवार की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोटी मोटी साधारण सी समस्याओं को
क्या पता

उनके लिये अमानवीयता
अवसरवादिता, क्रूरता, हृदयहीनता
जोड़–तोड़, साठ–गांठ, उठापटक
वक्त का तकाजा है
बाजार की मांग है
अपने को बनाये रखने की कला है
यानि जीवन के
नये बीज शब्द हैं

हत्या, लूट, बलात्कार
दंगों की दिल दहला देने वाली
जिन घटनाओं को देखकर
पसीने से तरबतर हो
मारे भय के कांप–कांप जाती हैं
हमारे घरों की स्त्रियां
उन खबरों को बांचते हुए
देखते–दिखाते हुए
जरा भी नहीं बदलता
उनके चेहरे का भाव
चिपकी होती है
एक यांत्रिक मुस्कुराहट उनके चेहरे पर

उनके द्वारा पढ़ी जाने वाली खबरों में
शामिल नहीं होता
उनका परिवार, उनके बच्चे
उनका सुख–दुख, संघर्ष,
उनके अभाव, उनके आंसू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनकी समृद्धि
उनके बिस्तरों की अवैध सिलवटें
उनके तलाक के किस्से
और तीसरे पति का नाम

हर बार
कामर्शियल ब्रेक के बाद
जब वे लौटती हैं दोबारा
उनके होंठों पर
लिपस्टिक का रंग
कुछ और गहरा व ताजा हो जाता है

वे तीसरी दुनिया के देश से आयी हैं
मगर लगती बिल्कुल भी नहीं

किसी भी अप्रिय घटना–दुर्घटना
किसी अनहोनी
किसी की मृत्यु या आत्महत्या
या किसी सामूहिक नरसंहार पर
दो मिनट का
मौन रखने की आजादी नहीं उन्हें

वे जानती भी हैं
उनके दो मिनट के मौन से
उनके आकाओं को
पड़ सकता है लाखों का फर्क
मौन की अवधि में
दिखाया जा सकता है
चार 'प्रचार'

जो दिखाई नहीं देता
वह यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by RKS MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि ठीक पर्दे के पीछे
वातानुकूलित केबिन के
रिवाल्विंग चेयर पर बैठा हुआ व्यक्ति
तय करता है
उनके पहनने के कपड़े
ज्वेलरी लिपस्टिक

वही तय करता है
कैमरे में दिखेंगी किस कोण से
खबरें बांचते हुए
पलकें कितना झपकायेंगी
मुस्करायेंगी कब कब और कितना
कितने फैलेंगे होंठ
हंसते हुए दिखेंगे कितने दांत

टी. वी. के पर्दे पर
खूबसूरत, आजाद और बिंदास
तीसरी दुनिया के देशों से आयी
ये समाचार वाचिकाएं
भले ही लगती नहीं
मगर जकड़ी होती हैं
अदृश्य बेड़ियों से !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंगों की बारिश में भीगी हुई

सुनीता वर्मा–
इस नाम को मैं
दोहराता हूं मन ही मन
और भर जाता हूं खुशी से–

मेरे ही शहर में रहती है
जो रंगों को छेड़कर
रंगों से खेलकर
चित्र ही नहीं बनाती
बल्कि रंगों से जीवन रचती है
रचती है जीवन का सौन्दर्य
सौन्दर्य का जीवन
जीवन में सौन्दर्य
सौन्दर्य में जीवन

कल्पना करता हूं मैं
कागज और कैनवास पर
सार्थक, सजीव, और जीवन्त उपस्थिति के लिये अपनी
कितनी बेचैनी से टहलते होंगे रंग
उसके मन में, मस्तिष्क में
कूंचियों का भी होता होगा
लगभग यही हाल
उनकी नाजुक और मुलायम उंगलियों के सहारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंगों में डूबकर
थिरकने, फुदकने, नाचने की चाह में

रंगों की बारिश में
भीगी हुई एक कलाकार
डूबी हुई उनकी गहराईयों में
उनके स्वभाव के अनुसार
अपनी तमाम खामोशियों
और एकाग्रता के साथ
उनसे बोलती बतियाती
उनकी अपनी भाषा में

इस समय भी भीगी हुई है वह
जबकि आई है मुझसे मिलने
छोड़कर अपने कला कक्ष में
रंगों का समुद्र
जिसकी चंचल लहरें
पुकार रही हैं उसे लगातार

मैं पूछता हूं
और चहक उठती है वह–
हर रंग का अपना स्वभाव होता है
जैसे हर मनुष्य की अपनी आदतें
जैसे 'रसों' के अपने गुण
हर रंग का स्वाद भी होता है अपना
जिसे कम से कम जीभ से चखकर
जान पाना मुश्किल है

सुखद आश्चर्य से भर जाता हूं मैं
कि उन्हें देखकर
उनसे मिलकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनसे बातचीत कर
जान पाना बहुत मुश्किल है
कि वे चित्रकार हैं
क्योंकि जिन रंगों में उलझी रहती हैं
भीगी रहती हैं जिन रंगों की बारिश से
उन रंगों के छींटे
दिखाई ही नहीं देते
उनके पूरे व्यक्तित्व के
किसी भी हिस्से में

बहुत देर तक बच पाना
बहुत मुश्किल है
उनके व्यक्तित्व की शालीनता
पहनावे की सादगी
बातों की मिठास
संगीतमय हंसी की खनक
और उनकी दो खूबसूरत
निर्दोष और समझदार
कुछ तलाशती सी
बेचैन आंखों के प्रभाव से
जिनमें रंग तैर रहे हैं या स्वप्न
यह भी कह पाना मुश्किल है

इस छोटी सी मुलाकात में
कहता हूं मैं अपने आप से
इसीलिए तो सुनीता वर्मा है वह–
रंगों के सम्मोहन
और तिलस्म में प्रवेश कर
उसे तोड़ती है
और फिर रचती है उन्हीं से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Digitized by eGangotri. E-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक तिलस्म, एक सम्मोहन
बिल्कुल वैसा ही!

उनके रचे हुए पेड़ सिर्फ पेड़ नहीं होते
उनके खिलाये हुए फूल सिर्फ फूल
बनायी हुई चिड़िया सिर्फ चिड़िया नहीं होती
नाचते हुए लोग सिर्फ लोग

उनके द्वारा खोली गई खिड़की सिर्फ खिड़की नहीं होती
खिड़की के पार होता है पूरा जीवन
होता है जीवन और सौन्दर्य का विराट संसार
होती हैं उम्मीदें,
स्वप्न, इच्छायें
यथार्थ के अच्छे बुरे अनुभव और दृश्य

हां हां यही तो जादू है उनका
कि उनके हाथ लगाने के बाद
पेड़ और फूल, भूल जाते हैं मुरझाना
चिड़िया उड़ना, खिड़की बंद होना
और नाचते हुए लोग विश्राम करना

बहरहाल
हमें प्रेम और समर्पण उस तरह करना चाहिए
जिस तरह सुनीता वर्मा
जिस प्रकार रंग बिखरे होते हैं
उनके चारों ओर
जिस तरह बिखरी होती हैं वे
रंगों के इर्द–गिर्द
प्रेम और समर्पण में हमें
कुछ उसी तरह बिखरना चाहिए ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनीता वर्मा : नवनिर्मित राज्य छत्तीसगढ़ के भिलाई शहर में निवास करने वाली सुनीता वर्मा नयी पीढ़ी के चित्रकार हैं। वे अपने चित्रों व पेंटिग्स के जरिये देश भर की पत्र–पत्रिकाओं व प्रदर्शनियों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर अपनी मुकम्मल पहचान बना चुकी हैं। वे लम्बे समय तक मशहूर चित्रकार जे. स्वामीनाथन के सानिध्य में रह चुकी हैं। सुनीता वर्मा पेशे से कला शिक्षिका हैं। देहली पब्लिक स्कूल भिलाई में बच्चों को चित्रकला सिखाती हैं। सुनीता वर्मा वर्ष 2007 में मध्यप्रदेश सरकार के कालीदास सम्मान से सम्मानित हो चुकी हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरूष-दृष्टि - एक

गर्मी के दिनों में
पीपल की छाया है
शीतल हवा का झोंका

बारिश के दिनों में
सिर पर तना हुआ छाता

ठंड के दिनों में
जिस्म से लिपटी हुई रजाई

और बसंत के दिनों में . . . . .

बसंत के दिनों में
आंगन में खिला हुआ
सबसे सुन्दर सबसे ताजा फूल
सांसों में बसी हुई
सबसे प्यारी खुश्बू है पत्नी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरूष-दृष्टि - दो

घर का दरवाजा है पत्नी
खिड़कियां है
खिड़कियों और दरवाजों पर
हिलगा हुआ परदा है
जो घर के अंदर की
मामूली गैर–मामूली चीजों को
छोटी बड़ी समस्याओं को
असुविधाओं को, अव्यवस्थाओं को
लुकाती–छुपाती है
बचाती है लोगों से
लोगों की बुरी नजरों से

आंगन में खिला फूल है
डाल पर बैठी मैना
जिस पर नजरें मुग्ध होकर टिकी रहती हैं
वह तस्वीर है
केला आम अमरूद शहतूत का पेड़ है
आंगन में लगा हुआ तुलसी का पौधा है
जलता हुआ दीपक है पत्नी
हर आने वाली सुबह के स्वागत में
हर आने वाले मेहमान के सम्मान में
आंगन में बनी हुई
रंगोली है पत्नी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसा क्यों

कभी कभी जब
कुछ भी नहीं होता करने को
सोचता हूं
कितने सपने लगते होंगे
एक ताजमहल बनाने के लिये

लोग कहते हैं
जिनके पास
जितने सपने हैं
उतने ही सपनों से
बनाया जा सकता है
ताजमहल

लोग तो
यहां तक कहते हैं
सिर्फ एक ही सपना काफी है
ताजमहल बनाने के लिये

मां के पास सपने ढेरों थे
मगर दुर्भाग्य
ताजमहल एक भी नहीं

ऐसा क्यों ! ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां की याद

मां की याद
ऐसे आती है
जैसे आती है महक
बाग के किसी कोने से
कोने में खिले किसी फूल से

जैसे आती है माटी–गंध
आषाढ़ की
पहली बारिश में
आंगन की
भीगी हुई काली मिट्टी से–

ठीक ऐसे ही आती है
मां की याद
जो अब रही नहीं
इस दुनिया में

मेरे लिये
मां की याद
मां का
इस दुनिया में होना है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे नहीं मालूम खुदाबख्श

सितारे कब हुए नाराज
कब बदले करवट नक्षत्रों ने
हाथों की लकीरों ने कब बदलीं अपनी दिशाएं
नहीं मालूम मुझे

कब छूटा तितलियों को पकड़ना
फूलों से खेलना कब छूटा
कब भूली भंवरों के पीछे दौड़ना
मिट्टी के घरोंदे बनाना कब छूटा
नहीं मालूम मुझे

नहीं मालूम मुझे
कब उतरी माँ की गोद से
पिता की उंगली कब और कैसे छूटी
किस सुरंग में जाकर गुम हो गई
गांव की पगडंडी
घर का रास्ता

नहीं मालूम मुझे
खिलखिलाकर हंसना कब छूटा
कब बीते सुहाने सपनों के दिन

बच्ची से कब हुई लड़की
कब बदल गई लड़की से युवती में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युवती से स्त्री में
और कब और कैसे बन गई
स्त्री से तवायफ
मैं बिल्कुल सच कह रही हूं
मुझे नहीं मालूम खुदाबख्श–
खुदा कसम !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तवायफ

मेरे गजरे की महक से
वह हो जाता है मदहोश
मैं स्वयं मुर्छित

मेरे आंचल का लहराना
जितना भाता है उसे
उतना ही घबराती हूं मैं

मेरे घुंघरूओं की झंकार सुनकर
झूम झूम जाता है वह
और मैं स्वयं जख्मी

तबले के जिस थाप पर वह
करता है वाह
मेरी छाती में
हथौड़ा बनकर गिरता है

उसे नहीं मालूम
जो वह सुन रह है
सारंगी की आवाज नहीं
मेरी सिसकियां है

मेरे जिस नाच पर
जिस थिरकन पर
जिस 'बल', 'खम' पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुग्ध हो रूपये उड़ा रहता है
मेरी तड़प है
छटछपाहट है मेरी

मेरी आंखों में वह
झील की गहराई देखता है
ढूढ़ता है मयखाना, मदहोशी
मुक्ति का मार्ग ढूढ़ती हूं मैं
उसकी आंखों में
उसके साथ में
सानिध्य में

हर बार पालती हूं उम्मीद
हर बार खाती हूं धोखा

इस बाजार में आने वाला
आता है
महज एक रात का प्रेमी बनकर
और मैं रह जाती हूं
तवायफ
उम्र भर की !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तस्वीर में मौजूद तितली

उसके पंख
स्त्री की इच्छाओं से बने हैं

रंग
स्त्री के स्वप्न से

उड़ान पर
पहरा है
अदृश्य पारदर्शी तलवारों का–

तस्वीर में मौजूद तितली
तस्वीर से बाहर आना चाहती है

देखिये
जरा गौर से देखिये
कोई स्त्री
मुक्ति का गीत गाना चाहती है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मठ में लड़कियां

सदियों से बुदबुदाये जा रहे हैं भगवान बुद्ध
निर्वाण निर्वाण निर्वाण

मठ में लड़कियां
घूमकर सारा मठ
खड़ी हैं इस वक्त
ठीक भगवान बुद्ध के सामने
जो बुदबुदाये जा रहे हैं सदियों से
निर्वाण निर्वाण निर्वाण

मुस्कुराती हैं लड़कियां
देखकर समाधिस्थ भगवान बुद्ध को
स्वयं बुद्ध को नहीं मालूम
क्या सोच रही हैं
ठीक उसके सामने खड़ी लड़कियां

कोई नहीं कर सकता परिभाषित
इस वक्त
इस मुस्कुराहट को

कहती है कोई एक
बहुत आहिस्ता
बुद्धम् शरण् गच्छामि् !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खिलखिलाती हैं लड़कियां–
आ तो गये !

आ
तो
गए
इस हद तक हो गया पारदर्शी
कि उसके पार
साफ दिखाई देने लगा सब कुछ

मारती है कोहनी
कोई एक, दूसरी को–
क्या पर्सनालिटी है
क्या व्यक्तित्व
क्या आकर्षण
क्या सम्मोहन
क्या गठीला बदन
क्या अपीलिंग है यार ऽ ऽ ऽ !

एक सिसकारी के साथ
फड़फड़ाते हैं ढेर सारे होंठ

मठ में लड़कियों को
भगवान बुद्ध के चेहरे की शांति दिखाई नहीं देती
भगवान बुद्ध के चेहरे पर व्याप्त
संतोष दिखाई नहीं देता
भगवान बुद्ध के चेहरे पर छाया हुआ
समस्त वासनाओं कामनाओं इच्छाओं पर
विजय दिखाई नहीं देता

कहती हैं
लड़कियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मठ में
भगवान बुद्ध से

लड़कियां नहीं
उनकी देह
उनका यौवन
उनकी उम्र
उनकी आत्माएं कहती हैं–

हम ही सुख हैं
हम ही सत्य
हम ही शांति
हम ही सृष्टि
हम ही मुक्ति
हम ही मोक्ष
मुक्ति. . . . .मोक्ष. . . . .निर्वाण

वही निर्वाण
जो तुम बुदबुदाये जा रहे हो भगवन
भगवान बुद्ध
सदियों से .. . .!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुबह की धूप

प्रेयसी सी खूबसूरत
शर्मीली
मौन
चुप !

पत्नी सी शांत
बेटे सी नटखट
बेटी सी कोमल
सुबह की
गुनगुनी धूप !!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहन की बिदाई

पिता के गुलशन का फूल
जिसे तोड़कर ले जा रहा है वह
हमारी अपनी मर्जी से

हम खुश हैं
रो रही हैं हमारी आखें

हम बिछड़ रहे हैं
और साथ हैं तुम्हारे
पास हैं तुम्हारे !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुनिया की मासूम आंखें

मुनिया रोज ही देखती है
गौर से
दादी के चेहरे को

झांकती है रोज ही
दादी की
निश्तेज आंखों में

हर सुबह रौशनी
यहीं से फूटती है
मुनिया नहीं कहती

कहती हैं
मुनिया की मासूम आंखें !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिता की मृत्यु के बाद पूनम

पूनम को देखकर
याद आ गईं मुझे वे लड़कियां
जो सपने पालने की उम्र में
संभालने लगती हैं
घर की जिम्मेदारियां

पिता की मृत्यु के बाद
उस तरह नहीं मिल पाते हम पूनम से
जिस तरह मिला करते थे पहले
जब जीवित थे उनके पिता

अल्हड़ मुर्खताओं से भरे
अपनी मासूम हरकतों से परेशान करते
होकर निश्चिंत, लापरवाह, गैर जिम्मेदार
हा. . . .हा. . . .ही. . . .ही करते
भकभकाते !

अब घर में घुसते हुए
रहना पड़ता है मर्यादित और गंभीर
भड़भड़ाने की आदत पर रखना पड़ता है काबू
रखना पड़ता है ध्यान
कि पिता खो चुकी लड़की
और पति खो चुकी स्त्री रहती है यहां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये चाहिए वो चाहिए की जिद्द से
परेशान करना
भूल गई एक ही पल में
मानो ले गये पिता अपने साथ
अपनी मासूम बेटी का यह स्वभाव
चली गई लगभग
बात बात पर
रिसाने रूठने की आदत

चेहरे से चली गई कोमलता
चंचलता और चमक पर
चढ़ गया हल्का पीला उदास रंग
हर वक्त खिले रहने वाले चेहरे से
चली गई रौनक
ताजगी और उमंग से भरी हंसी
गायब हो गई उसके होंठों से
मानो लम्बे समय से रूक गया हो
संगीत का उसका रियाज़

पिता की आकस्मिक मृत्यु के बाद
बदल गया बहुत कुछ पूनम के जीवन में
अब तक जिसे संभालती रही मां
वही बेटी अब
संभालने लगी मां के समान
पिता के जाते ही अचानक
भीतर–बाहर से टूटकर बिखर रही मां को

दो छोटे भाईयों की देखभाल
और उनकी पढ़ाई–लिखाई की चिंता
अक्सर रेत बनकर गिरती है
उसके खयालों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अचानक अपनी उम्र से बड़ी होकर
संभालने लगी पिता की मृत्यु के बाद
उनकी छोटी–बड़ी सारी जिम्मेदारियां
अपने नाजुक कंधे पर

समय से पहले
अपनी उम्र से बड़ा हो जाना
किसी सजा से कम नहीं,
पिता की मृत्यु के बाद
न जाने क्या क्या खो देती हैं बेटियां
जाने–अजाने एक ही झटके में
जैसे पूनम

समय के क्रूर पंजे ने
ली हो हल्की सी करवट
और खत्म हो गया हो एक पूरा जीवन पूनम का
और अब दूसरे जीवन की शुरूआत में
न बचा हो
प्यार करने के लिए समय और इच्छा

कभी कभी ऐसा होता जरूर होगा
कि पहले जीवन में किया गया प्रेम
देता होगा दस्तक उसके एकांत में
कोई प्यास अचानक आ बैठती होगी
उसके कंठ और आत्मा में
कोई आग अचानक सुलग उठती होगी देह में

पहले जीवन में लिखे गये
अधूरे प्रेम पत्र
फड़फड़ाते होंगे बेचैन बेतहाशा स्मृतियों में
कभी कभी ही सही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिता की मृत्यु के पहले
देखे गये ढेरों सपने ऐसे भी होंगे
जिनके सिर उठाने से पहले ही
दबोचकर दफन कर देती होगी
मन के किसी ठंडे रेगिस्तान में
और झांकने से डरती होगी
पिता की मृत्यु के बाद पूनम !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जांता

तब चक्की नहीं थी
जांता था
जैसे मिक्सर ग्राइन्डर से पहले
सिलबट्टा

तब हर घर में
कोई न कोई कोना
होता था सुरक्षित
इस जांते के लिये

तब बहुएं
इतनी नाजुक नहीं होती थी
तब उनका सौन्दर्य
सौन्दर्य प्रसाधनों के इस्तेमाल से नहीं
श्रम से निखरता था।

रात के तीसरे पहर से ही
शुरू हो जाती थी उनकी दिनचर्या
और शुरूआत
जांता से

जब तक जागते घर भर के लोग
पीस चुकी होती
पूरे परिवार की रोटी के लिये आटा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by MoE-IKS 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके बच्चों की आधी नींद
बिस्तर में पूरी होती
और आधी
गेहूं पीस रही मां की
फैली हुई टांग पर सिर रखकर
और सुलाता
जांता चलने का संगीत

तब आटा पालीपैक में नहीं मिलता था
तब अपने आटे को शुद्ध
व पौष्टिक बताने वालों की
होड़ न थी
तब मुनाफा कमाने के तरीके न थे–

तब जांता था
चक्की नहीं !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिलाई मशीन

मेरे लिये कोई महत्व नहीं
कपड़ा पहले आया
या आयी सिलाई मशीन

पहनावा यदि सभ्य होने की पहचान है
तो हमारे पहनावे में
यानी हमारे सभ्य होने न होने में
उत्तरोत्तर परिवर्तन का
चश्मदीद गवाह है यह

सरकार की सबसे सस्ती
सरल व उपयोगी योजनाओं में से
एक है इसका वितरण
गरीब, विधवा, परित्यक्ता महिलाओं में

माताएं अपनी बेटियों को सिखाती हैं
सिलाई–बुनाई–कढ़ाई
देती हैं दहेज में इसे
कि आड़े वक्त में आये काम
बंधा रहे चार पैसा
उनकी बेटियों की गांठ में

हमारी बेटियों के समान चंचल व बातूनी
हर वक्त करती रहती है पटर पटर
इसकी 'भाखा' को समझते हैं कपड़े या फिर दर्जी
आवाज में जरा सा भी बदलाव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर देता है चौकन्ना
किस पुर्जे में आयी है खराबी
जान जाता है दर्जी

ऐसे समय में
जबकि खत्म हो रहे हैं रोजगार के अवसर
बाजार का खेल चल रहा है उटपटांग
पूंजीपति रच रहे है षडयंत्र
बाजार में रेडीमेड कपड़ों के
एक छत्र राज के बीच
भरोसा दिलाती है यह
कि फिलहाल
दर्जी का परिवार रहेगा सुरक्षित
जुटा लेगा आजीविका
दो वक्त की रोटी
नहीं करेगा आत्महत्या

दो घंटे पचास मिनट की
फूहड़ दृश्यों, उत्तेजक नृत्यों,
कोरी कल्पनाओं, मूर्खतापूर्ण भावुकताओं,
अविश्वसनीय अपराधों,
प्यार व बदले के चालू फार्मूलों से लबरेज
बिना ओर–छोर की कहानी वाली
भारतीय फिल्मों के मायाजाल में
कहीं कुछ यथार्थ होता है
तो सात मिनट के उस दृश्य में
जिसमें होती है सिलाई मशीन
जिसे पति की मृत्यु के बाद
चलाती है उसकी पत्नी
सिलती है पड़ोसियों के कपड़े
और पालती है अपने बच्चे को
बाद में यही बच्चा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़ा होकर बनता है नायक
और फिर
दो घंटे पचास मिनट की पूरी फिल्म में
कहीं दिखाई नहीं देती यह

सिलाई मशीन न होती
तो जाने क्या होता कविता मिश्रा का
भूख व पारिवारिक जिम्मेदारियों से
हलाकान परेशान
न जाने
उठाती कौन सा कदम

इस अमानवीय समय में
हम सुई और धागे के समान नहीं जी सकते
किसी के जीवन का ऐसा कुछ भी नहीं सी सकते
जैसे सिलाई मशीन
गाता है फकीर का इकतारा
और शाम भर जाती है
उदासी
उत्कंठा
वितृष्णा
खटास से !

कविता मिश्रा : बिहार के जन कवि स्व. राम प्रिय मिश्र 'लालधुंआ' की 70 वर्षीय वृद्ध पत्नी, जो इस उम्र में भी सिलाई मशीन सुधारकर व कपड़े सी कर अपने परिवार का भरण पोषण करती है।

यह कविता संडे आब्ज़र्वर में छपी एक खबर के आधार पर बहुत पहले लिखी गई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रसोईघर - एक

घर के अंदर
एक और घर का नाम है
रसोई घर

पूरे घर में
सिर्फ एक कमरे में बसती है
यह जादू नगरी
और यह जादू नगरी चलती है
एक स्त्री के इशारे पर

यह एक ऐसी पहेली है
जिसे हल करने के लिये
आपको चाहिए एक स्त्री का साथ
नहीं तो चाय की पत्ती ढूढ़ने में ही
बीत जायेगा सारा समय
पानी उड़ जायेगा भाप बनकर
केतली रह जायेगी सूखी और गर्म
आग बबूला

ढेर सारे बर्तनों
छोटे बड़े डिब्बों, कनस्तरों
चाकू, पैसूल, हंसिया और सिलबट्टे की
एक ऐसी दुनिया है यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहां किसी भी चीज को हाथ लगाते हुए
कांपता है पुरूष का मन

नीबू मिल भी गया
तो नमक ढूढना हो जाता है मुश्किल
प्याज हाथ में हो
तो पैसूल हो जाता है लापता
चावल, दाल, शक्कर ढूंढकर
अपनी पीठ थपथपा भी लें
तो सरसों, जीरा, आजवाइन खोजते
आ जाता है पसीना

जैसे–तैसे आटा गूथ भी लें
तो रोटी बेल पाना हो जाता है असंभव
चाकू और कद्दू के चक्कर में
कट जाती है उंगली
निकल आता है खून

यहीं आकर जलता है
हवन करते हुए हाथ

यह स्त्री के हाथ लगाने से
खिलने वाला फूल है
यह ऐसा वाद्य यंत्र है
जो स्त्री के हाथ लगाने से बजता है
यहां के संगीत के संसार का स्वप्न
अधूरा है स्त्री के बगैर

स्त्रियों की अस्मिता
उनकी प्रगतिशीलता
उनकी आजादी
उनकी मुक्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनकी स्वतंत्रता की
तमाम घोषणओं व लड़ाईयों के बीच
यह स्त्री को ही पुकारता है
उसी के कदमों की आहट
और चूड़ियों की खनक से
खुलता है
इस जादू नगरी का द्वार

चाय–पानी, दाल–रोटी
चौका–बर्तन के चक्कर में
स्त्री को उलझाये रखने के लिये
रचे गये षडयंत्र का नाम
कतई नहीं है
रसोईघर !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रसोईघर - दो

स्त्रियों का ऐसा संसार है यह
जहां पुरूषों का प्रवेश वर्जित तो नहीं
मगर अघोषित तौर पर है असंभव

तमाम किस्म की लड़ाईयां
तमाम किस्म के युद्ध जीतने वाले
अक्सर इस व्यूह में प्रवेश कर
हुए हैं पराजित
उनके संघर्षों का ग्राफ
यहीं आकर गिरा है
उनकी सफलता
यहीं आकर मांगती है पानी

यह एक ऐसा तिलस्म है
ऐसी मायानगरी
जहां प्रवेश करते ही
मारी जाती है मति
सारा दंभ, सारा अहंकार
यहां प्रवेश करते ही
उड़ जाता है कपूर बनकर
और पूरूष के चेहरे पर
झुंझलाहट लगा देती है अपना मुहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिस धैर्य के लिये
जाने जाते हैं वे
दे जाता है जवाब

इस कारावास (पुरूष लगभग यही मानता है) में
रहना पड़ जाय दो चार घंटे
तो घुटने लगता है दम
दिमाग के सारे पुर्जे हो जाते हैं ढीले

जिन पुरूषों को लगता है
वे जान चुके हैं
इस किले को भेदने का रहस्य
उनको मुंह चिढ़ाता
उनको झुठलाता
स्त्रियों का यह संसार
स्त्रियों का यह स्वप्नलोक
ताल ठोकती चुनौती है
आज भी
उन पुरुषों के लिये

सदियों से अपराजेय है यह किला
इस किले पर
किसी पुरूष ने
आज तक नहीं गाड़ा
फतह का कोई झंडा !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिन्दगी के शेष दिन

उसने
एक बेहद खूबसूरत लड़की से प्रेम किया
जिया एक अच्छा प्रेमी बनकर
अपनी जवानी के स्वर्णिम दिन गुजारे

उसने
परिवार की मर्जी से
एक सुन्दर लड़की से विवाह किया
रहा अच्छा पति बनकर
किया पति का फर्ज अदा
दहेज के पैसे से बनवाया मकान
अपनी जिन्दगी के अच्छे दिन बिताए

प्रेमिका अच्छी थी या पत्नी
प्रेम के दिन अच्छे थे
या विवाह के बाद के दिन

उसकी जिन्दगी के शेष दिन
यही तय करने में बीत रहे हैं !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ममता दादौरिया दहेज हत्याकांड

प्लास्टिक, पेट्रोल, मिट्टी तेल और कपड़े के साथ
गोश्त के जलने की बद्बू फैली हुई है
फरसगांव की फ़िजा में

समाज का बेहद वीभत्स, क्रूर, घिनौना चेहरा
सरेआम हो गया है नंगा
सुधीर दादौरिया और सगुना दादौरिया की शक्ल में

अखबार में यह खबर भी बिल्कुल वैसी
और उतनी ही छपी
जितनी और जैसी छपती रही है
आज से सैकड़ों–हजारों बार पहले
इससे ज्यादा कुछ हो भी नहीं सकता
क्योंकि अखबार के पास खबर से आगे
सोचने या लिखने के लिए
न तो समय है
न शब्द
और न ही संवेदना !

दूसरे ही दिन ममता दादौरिया के
जले हुए जिस्म पर
देश–विदेश की इतनी खबरें
इतनी परतों में आ चिपकीं
कि लोग भूल ही गए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि कल ही ममता नाम की लड़की
दहेज के लिए जला दी गई
वे लोग भी भूल गए
जिनके घरों में हैं ममताएं

बावजूद इसके
एक अदृश्य संवाददाता मौजूद है इन दिनों
फरसगाँव में
जो जानना चाहता है
वे बातें
कारण
घटनाएं
जो रह गईं अखबार में छपने से
या जिसे जानने में चूक गए अखबार नवीस

फरसगाँव में बहुत सारे लोग थे
जो दहल गए थे इस घटना से
बहुत सारे लोग थे, जो बदल चुके थे भीड़ में
बहुत सारे लोग थे, जो गायब थे भीड़ से
बहुत सारे लोग थे, जिनमें मात्र उत्सुकता थी
बहुत सारे लोग थे, जिनकी संवेदनाएं मर चुकी थीं
बहुत सारे लोग थे, जो बारूद में बदल चुके थे
बहुत सारे लोग थे, जो बारूद में बदल चुके थे
बहुत सारे लोग थे, तो बहुत सारी बातें थीं

बहुत सारे लोगों की
बहुत सारी बातों को जानने से पहले
जानना होगा उस घर को
जो ममता में रहता था
या जिसमें रहती थी ममता–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ममता के साथ
ममता के बराबर जला है यह घर भी–

इस जलकर मरे हुए घर को देखो
तो लगता है
ममता थी तो बोलता–बतियाता था घर
ममता थी तो राह चलते लोगों से गपियाता था
ममता थी तो मुस्कुराता था आंगन
सजता था रंग–बिरंगी रंगोली से
ममता थी तो पायल और चूड़ियों का
संगीत बजता था घर में
ममता थी तो खिलखिलाते थे घर के बर्तन
ममता थी तो चींटियों को मिलता था शक्कर
ममता थी तो भिखमंगों को मिलता था
मुट्ठी भर चावल, छुट्टे पैसे, दो मीठे बोल
ममता थी तो घर की हर चीज में थी रौनक
ममता थी तो घर के चेहरे पर थी जिंदादिली
गरज कि
ममता के होने से था घर का घर होना

एक ममता के न होने की तकलीफ तो
वह घर ही बताएगा
जिस घर में जलती है ममता
जलाने वाले क्या खाक बताएंगे

ममता के न होने से
अब कुछ भी नहीं है इस घर में
बल्कि बाहर बंद दरवाजे पर
लटक रहा है सील बंद ताला
जिसे लगा गया है थानेदार

लेकिन घर के बाहर
बहुत सारे लोग थे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो बहुत सारी बातें थीं
मसलन (मार्फत सुधीर दादौरिया के मित्रों के)
–ममता का बाल विवाह था
–ममता कम पढ़ी लिखी थी
–ममता मोटी थी
–ममता खूबसूरत नहीं थी
–मां नहीं बन सकती थी ममता
–ममता के भाईयों ने कम दिया था दहेज

बहुत सारे लोगों की
बहुत सारी बातों में
शामिल नहीं था बहुत कुछ
मसलन (मार्फत फरसगांव में फैली हवा के)
ममता को भी चाहिए था सम्मान
ममता भी थी सहानुभूति की हकदार
ममता भी थी श्रद्धा–सेवा–संवेदनशीलता की मिसाल
ममता भी खटती थी दिन–रात
घर की सुख–शांति के लिए
स्त्रियों से नैतिक आचरण की उम्मीद पालने वाला समाज
ममता से भी रखता नैतिक आचरण!

बहुत सारे लोग थे
तो बहुत सारी बातें थीं ममता के पक्ष में
मसलन
ममता ने कभी नहीं कहा
जिसकी लंबी उम्र के लिए करती थी मंगल कामना
हर वक्त अश्लील अपशब्दों से करते थे संबोधित
ममता ने कभी नहीं कहा
जिन कदमों में झुकती थी
दिन–रात मारते थे ठोकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ममता ने कभी नहीं कहा
कि पति का पतलून खिसकने से रोकने वाला बेल्ट
हर रात उसकी पीठ के साथ करता है रति
ममता ने कभी नहीं कहा
उसका बनाया हुआ खाना
बेस्वाद करार देकर ठोकर मार दिया जाता है
ममता ने कभी नहीं कहा
उसका पति आदमखोर, अय्याश, शराबी और क्रूर है
ममता ने कभी नहीं कहा किसी से
अपनी इच्छाओं, शौकों और सपनों के बारे में
ममता ने कभी नहीं कहा
उसे मारने के लिए रचा जा रहा है षडयंत्र
ममता ने जो कभी नहीं कहा
कहना चाहती थी वही सब

मिट्टी तेल, पेट्रोल, माचिस की एक तीली
और परिवार वालों की क्रूरता का शिकार होकर
जलकर पड़ी थी अस्पताल के बिस्तर पर ममता
उसकी आंखों में भय, दुख, घृणा और क्रोध का
मिला–जुला भाव तैर रहा था
अपने पति और पति की मां के लिए

चेक करने आया डॉक्टर
रो पड़ा सुनकर ममता की बात–
"डॉक्टर साब !
फरसगांव में किसी ने मेरे पैर का
नाखून तक नहीं देखा था
अब सारा गांव देख रहा है
तो बिना कपड़े के !"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरी भीड़ के सामने
निरपराध–सा खड़ा था उसका पति
और सास कह रही थी
बचा लूंगी बेचकर पांच बीघा जमीन

कानून व न्याय की
तंग, संकरी और घुमावदार गलियों में
सैकडों चोर दरवाजे हैं
जिनसे होकर बच निकलता है हर बार अपराधी
यदि ऐसा न होता
तो पांच बीघा जमीन बेचकर
बचा लेने का दावा न करती
सगुना दादौरिया (सुधीर दादौरिया की मां)

तो क्या सचमुच बच जायेगा सुधीर दादौरिया
तो क्या सचमुच बच जाना चाहिए उसे
तो क्या हर बार भाईयों का विश्वास हारता रहेगा ?

हारा हुआ विश्वास भी
हत्या का रास्ता अपना सकता है
क्योंकि चार भाइयों की
अकेली बहन थी ममता,
कोई एक चल दे जेल
मारकर सुधीर दादौरिया को
तो क्या फर्क पड़ता है

किस तरह बचाई जाय ममता
या ममता जैसी लड़कियों को जलने से
कौन सा रास्ता अपनाया जाए
कि आने वाले दिनों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न जलाई जाए कोई ममता
क्या सोचते हैं आप ?

आपका सोचना इस वक्त
ममता के पक्ष में
आपका फैसला होगा

एक अदृश्य संवाददाता की रिपोर्ट है यह कविता
किसी अखबार के लिए नहीं
उन भाईयों के लिए
जिनकी बहनें हैं
उन मां–पिताओं के लिए
जिनकी बेटियां हैं
उन घरों के लिए
जिन घरों में रहती हैं ममताएं !

पुनश्च : मैं यह बताना तो भूल ही गया
अखबार के जिस पन्ने में
ममता दादौरिया के जला दिए जाने की खबर छपी थी
तीन दिन बाद ही
उसी कोने में
छपा एक वैवाहिक विज्ञापन
"वधू चाहिए"
जिसमें दहेज का कहीं कोई जिक्र नहीं था !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवान हो रही लड़की - एक

जब छोटी थी
मां की हंसी
पिता की खुशी में शामिल थी

अब
सयानी हो गई है

मां की चिंता में शामिल
पिता को बेचैन किए है
लकड़ी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवान हो रही लड़की - दो

घर में
वक्त बेवक्त
मचने वाला शोर
गूंजने वाली किलकारी
खनकने वाली हंसी
महकने वाली खुशी
होती जा रही है कम
धीरे धीरे

धीरे धीरे
बढ़ता जा रहा है सन्नाटा
पसरती जा रही है खामोशी

जवान हो रही है लड़की
धीरे धीरे
घर में !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवान हो रही लड़की - तीन

पहले हथेली में ख्वाब सजाती है

फिर सोचती है
दुनिया के बारे में
दुनिया की खूबसूरती के बारे में

और अंत में जब
थक जाती है सोचते सोचते
कहती है अपने आप से

दुनिया
मुझसे ज्यादा खूबसूरत नहीं

संभवतः सच कहती है
हथेली में ख्वाब सजाकर
सोचने वाली लड़की

पड़ोस में रहने वाले लड़के ने
लिखा भी था
एक बार
चोरी–छिपे दिये अपने प्रेम पत्र में
और नाराज हो गई थी वह
उस पर
उस वक्त !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवान हो रही लड़की - चार

लौटी है जब से
देखकर ताजमहल
बदल गई है लड़की
बहुत बदल गई है
जवान हो रही
वो सांवली सी लड़की

ताज़महल भी बदल गया होगा बहुत
थोड़ा बहुत
उस सांवली सी लड़की के
उसे जी भर देखकर लौटने के बाद

मुझे लगता है
किसी को भी बदल सकती है
जवान हो रही लड़की की नजर !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवान हो रही लड़की - पांच

देखकर वापस खींचते
दूब में हिलगे
ओस की बूंद को
छेड़ने के लिये बढ़ा हुआ अपना हाथ
पहली बार सोचा मैंने
अब तक की
अपनी सोचों से परे
जवान हो रही उस लड़की के बारे में

ठीक ओस की बूंद के समान लगी वह मुझे

पहली बार हुई मेरी इच्छा
खींच लूं
उसकी तरफ बढ़ा हुआ
अपना हाथ

जानते हुए
कि निरर्थक है मेरा जीवन
बगैर उसके !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवान हो रही लड़की - छः

जवान हो रही लड़की से
नहीं डरता कोई

भाई को छोड़ दीजिए
मां को छोड़ दीजिए
पिता को छोड़ दीजिए
छोड़ दीजिए
स्वयं लड़की को !

लो
इन सबको छोड़
डरेगा भी कौन
जवान हो रही लड़की से
इस दुनिया में !!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवान हो रही लड़की - सात

मुश्किल है
जवान हो रही लड़की पर कविता
वह कहता है
और हो जाता है
पसीने से तर
जवान हो रही लड़की पर कविता !

मित्रो
किसी लड़की का जवान होना
सबसे बड़ी घटना है
उससे भी बड़ी घटना है
जवान लड़की पर कविता !!

एक व्यक्ति
हमारे समय का
सबसे बड़ा झूठ बोल रहा था
जिसे सुनकर
खुश हो रहे थे
कुछ लोग
कुछ ही लोग !!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़की

अमृता शेरगिल की पेंटिंग है लड़की
साहिर की शायरी
अमृता प्रीतम का उपन्यास

सआदत हसन मंटो की कहानी
मसलन 'खोल दो'
इस्मत आपा का 'लिहाफ'
तस्लीमा नसरीन की 'आत्मकथा'

जगजीत–चित्रा की गजलें
नौशाद का संगीत

सीताफल की मिठास है लड़की
पलाश का फूल
महुए का नशा

तुलसी का पौधा
आंगन में बनी रंगोली
पिजरे में बंद मैना भी

तुलसी के महाकाव्य की नायिका
महाभारत की द्रोपदी
सृष्टिकर्ता की सबसे सुन्दर कृति है लड़की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोस्तों
दुनियादारों
कुछ भी होने से पहले
मिट्टी है लड़की
अपने पिता के आंगन की !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बलात्कार कथा का अंत

कहीं ऐसा तो नहीं
जो बच्चे पल रहे हैं हमारे घरों में
भविष्य की अपराध कथाओं के नायक हैं

'पूजा' को खोकर
कुछ सीखते हम
तो भविष्य में बच जातीं
हमारी मासूम और नाबालिग बेटियां
बलात्कार व हत्या का शिकार होने से

सीखना हमारे स्वभाव के विपरीत है
हम संवेदनहीन समाज के
बेजान पूर्जे में बदल चुके हैं
पूर्जे सीखा नहीं करते

हमारा गुस्सा
सोडे की बोतल में भरा हुआ है
हमारी चिंता
चाय की प्याली में
हमारा आक्रोश
हमारे घर के सामने की
नाली से होकर
निकल जाता है शहर से बाहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम उस बलात्कार कथा
(दरअसल 'घटना') का अंत देखकर प्रसन्न हैं
जिसका शिकार 'पूजा' नाम की मासूम बच्ची हुई थी
जो जानती तक नहीं थी
बलात्कार क्या है
और जो बलात्कार का
अर्थ जानने के लिये
जिन्दा भी नहीं बची
बलात्कार का शिकार होने के बाद

इस बलात्कार कथा का अंत भी
उन तमाम बलात्कार कथाओं के समान ही हुआ
जिनमें अपराध साबित होने पर
अपराधियों को
भेज दिया जाता है जेल

18–20 की उम्र के
'पूजा' के बलात्कारियों को
यानी जसवंत, मोहित, ओमप्रकाश
दिलीप ताड़ी और रवीन्द्र को भी
भेज दिया गया सलाखों के पीछे
जहां से न वर्तमान दिखाई देता है
न भविष्य
और इस तरह हो गया अंत
बलात्कार की एक हृदयविदारक घटना का

'पूजा' की नुची–खुंची लाश देखकर
भड़का हुआ जन आक्रोश अब
हो चुका ठंडा
दिनचर्या भी सामान्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूजा के पिता निभाने लगे हैं
अपना पिता धर्म
दूसरे बच्चों की परवरिश की चिंता से घिरे
जाने लगे हैं नौकरी पर

माँ की आंखों में
उमड़ आते हैं कभी कभी आंसू
पूजा को याद कर
भाईयों का पीछ कर लेती हैं
कभी कभार
पूजा की दर्दभरी चीखें
और वे नींद में चौंककर
उठ बैठते हैं

जिस बलात्कार कथा का अंत देखकर
प्रसन्न हैं आप
हैं निश्चिंत
कि पकड़े गये अपराधी
और सजा भी हो गई उन्हें
हमें देखना चाहिये उसका आरम्भ

इस कथा का आरंम्भ यह है
कि 'पूजा' की चीख
हमारे कानों तक पहुंचती तो है
मगर हमें बेचैन नहीं करती

इस कथा का आरंम्भ यह है
कि हम इस घटना के बाद भी
आश्वस्त हैं
कि भविष्य में बलात्कार का शिकार होने वाली लड़की
हमारी बेटी नहीं होगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निश्चिंत हैं कि
हमारे बेटे नहीं करेंगे
बलात्कार व हत्या जैसे
जघन्य अपराध

भविष्य में जो भी होगा
हमारे साथ नहीं होगा
भविष्य में जो भी करेंगे
हमारे बच्चे नहीं करेंगे

इस कथा का आरंम्भ यह है
कि हम अपने आसपास फैले
अंधेरे के प्रति फिर भी आश्वस्त हैं
कि तमाम किस्म की बुरी चीजें
बुरे विचार
बुरे इरादे सांस नहीं ले रहे हैं

इस कथा का आरंम्भ यह है
कि जिस शराब–सिगरेट–गांजा
नशे के अन्य तमाम साधनों से
बरसता है सरकारी खजाने में पैसा
वह समाज को इतनी तेजी से
खोखला, हृदयहीन, अमानवीय
और क्रूर बना रहा है
जिसकी कीमत
सरकार या सत्ता नहीं
जनता चुका रही है
समाज चुका रहा है

विकास व समाज सुधार के
तमाम आंकड़ों का ग्राफ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिरता जा रहा है तेजी से
एक खूबसूरत धोखा
व सुनहरे रंग का पर्दा है
जो हमें यह सब देखने से
रोक रहा है
या देखकर भी
अनदेखा करना सीखा रहा है

इस कथा का आरंम्भ यह है
कि उपलब्ध मनोंरंजन के साधनों में
बलात्कार व हत्या की
जिन कथाओं को देखते हैं हम
उन कथाओं को
महज कथा
या कल्पना मानकर भूल जाते हैं
यथार्थ मानने से कतराते हैं
जिसकी संगीतमय प्रस्तुति से मुग्ध
हम भूल जाते हैं
कि यह घटना
हमारे आसपास भी घट सकती है

सेटेलाइट के माध्यम से
टी.वी. और उसके चैनलों के जरिये
समाज में घोला जा रहा है जहर
न बच्चों को
कोई चेतावनी मिल रही है
न अभिभावकों को कोई सीख
चिंता तो मानो दूर ही है कोसो
निश्चिंत हैं सभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस कथा का आरंम्भ यह है
कि लोग मानने लगे हैं
कि ये समस्याएं
हमारे हल करने के लिए नहीं हैं
इन समस्याओं का समधान लेकर
आयेगा कोई नायक
कोई अवतार
कोई ईश्वर

मित्रो
इस कथा का आरंम्भ
बहुत वीभत्स, घिनौना और हृदयविदारक है
इस कथा के आरम्भ के जिम्मेदार
हम हैं
हम ही हैं कहीं न कहीं ज्यादा

यह घटना
ये साबित और आगाह करती है
कि हमारे घरों में
हमारे परिवार व देश में
बेहतर भविष्य के रूप में
पल रहे हैं जो बच्चे
दरअसल वे ही
इन अपराध कथाओं के
भावी नायक हो सकते हैं

हो सकते हैं असली नायक !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्त्री-पुरूष

1.

यह प्रेम का सबसे विश्वसनीय मुहावरा है
सदियों पुराना
सर्वथा नवीन

प्रेम के इस मुहावरे में स्त्री है
प्रेम के इस मुहावरे में पुरूष है

प्रेम के इस मुहावरे ने
कितने ही दिलों में
प्रेम पैदा किया
प्रेम कथाओं को जन्म दिया

मगर पिछले कुछ दिनों से देख रहा हूं
प्रेम का यह मुहावरा
अपनी चमक
अपनी विश्वसनीयता खोता जा रहा है

आप इसे यूं देखिये
मुहावरा वही है
वैसा ही है
हमारे समय के स्त्री–पुरूष को
कुछ होता जा रहा है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2.

पुरूष ने कहा–

तुम मेरी हो
मैं तुमसे प्रेम करना करता हूं
तुमसे विवाह करना चाहता हूं
तुम्हारे साथ घर बसाना चाहता हूं
पिता बनकर
तुम्हें मां का दर्जा दिलाना चाहता हूं

पुरूष का इशारा समझती थी स्त्री
इरादा जानती थी

जानती थी
कि पुरूष
पराधीन बनाना चाहता है
गुलाम बनाना चाहता है
बदल देना चाहता है
स्त्री को
अपने उपनिवेश में !

3.

पुरूष के पास अच्छी नौकरी थी
स्त्री के पास सुन्दरता
सुन्दर देहयष्ठि

इस तरह
विवाह सूत्र में बंध गये दोनों
अच्छी नौकरी
सुन्दर देहयष्ठि की बदौलत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दाम्पत्य सिर्फ
इसी के भरोसे नहीं चलता
बहुत देर से जान पाये दोनों !

4.

स्त्री लोरी गाती रही
बच्चा बड़ा होता गया

स्त्री लोरी गाती रही
बच्चा पुरूष बनता गया

5.

स्त्री बोली
मेरी दुनिया में तुम्हारी जरूरत है
पुरूष ने कहा
मेरी कहानी में
तुम्हारी कोई जरूरत नहीं

स्त्री की दुनिया अधूरी है
पुरूष की कहानी !

6.

पुरूष बैठकी से पुकारता रहा
स्त्री रसोई से जवाब देती रही

परिणाम–
पुरूष बाजीगर में बदल गया
स्त्री बर्तन में !

7.

पुरूष ने कहा
चलो कहानी में विचरण करते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्त्री बोली
लौटते हैं जीवन में

स्त्री से मानो
बहुत बड़ा अपराध हो गया !

8.

पुरूष ने स्त्री पर कविता लिखी
उसकी आजादी के गीत गाये
तरक्की के राह बताये
मुक्ति के स्वप्न दिखाये

स्त्री प्रसन्न हुई
प्रसन्नता में उड़ने लगी

उड़ते उड़ते जिस पर गिरी
पुरूष के द्वारा
बिछाया हुआ बिस्तर था !

9.

स्त्री गंध की भाषा पहचानती थी
बोलती थी स्पर्श की बोली

पुरूष समझता था
देह की भाषा

फासला
सदियों का है
स्पर्श–गंध और देह के बीच
स्पर्श–गंध और देह की भाषा के बीच !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10.

पुरूष ने कहा
मैंने ढेर सारे सपने बुने हैं

स्त्री बोली
लाओ
मैं उनमें रंग भर देती हूं

मगर ऐसा हुआ नहीं

पुरूष अपने सपनों को दबोचे बैठा रहा
स्त्री अपने रंगों को सहेजे

यदि ऐसा हो जाता
तो दुनिया कुछ और होती
दुनिया का रंग कुछ और होता !

11.

पुरूष ने कहा
यह दुनिया हमसे है

स्त्री बोली
इस दुनिया के होने में
स्त्री का होना ज़रूरी है

पुरूष के कहने में अहंकार था
स्त्री के बोलने में आग्रह

मगर बात जिद्द की थी

पुरूष ने स्त्री को
बचपन से ही मारना शुरू कर दिया !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12.

ईश्वर को झूठ बोलने की इच्छा हुई
तो उसने कहा–
पुरूष समय को
गांठ में बांधकर रखता है।

13.

स्त्री ने गलती की
प्रताड़ित हुई

पुरूष ने गलती की
स्त्री फिर भी प्रताड़ित हुई !

14.

स्त्री कभी कुछ नहीं बोली
पुरूष उम्रभर दोहराता रहा–

पुरूष को कुल की चिंता थी
स्त्री को कोख की !

15.

पुरूष लिंग के सहारे खड़ा था

स्त्री जिंदा थी
गर्भाशय की बदौलत !

16.

स्त्री के पास
स्त्री का दुख था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरूष के पास पुरूष का

स्त्री के पास
पुरूष का भी दुख था

17.

स्त्री के पास
सैकड़ों कहानियां थीं
सैकड़ों सच

पुरूष के पास
झूठ थे
हजारों!

18.

स्त्री दाल पकाना चाहती थी
पुरूष मछली खाना चाहता था

मैंने देखा
पुरूष की थाली में
मछली नहीं
स्त्री थी !

19.

जिस समय पुरूष
तीतर–बटेर मार कर लौट रहा था
स्त्री गौरैय्या को दाने डाल रही थी

इस दृश्य के ठीक पीछे देखिये
बस ! जरा गौर से
स्त्री उन चिड़ियों को बचाना चाहती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरूष जिन चिड़ियों को
मारकर खा जाना चाहता है !

20.

स्त्री यथार्थवादी थी
पुरूष स्वप्नजीवी

शोध रपट में लिखा गया
पुरूष यथार्थवादी है
स्त्री स्वप्नजीवी !

21.

पुरूष चूंकि राजा था
उसे रानी की जरूरत महसूस हुई
राज्य के सबसे सुन्दर स्त्री का वरण किया

पुरूष चूंकि राजा था
एक रानी के भरोसे कैसे जीता
सो रानियों की संख्या बढ़ती गई

राजा बूढ़ा होता जा रहा था
पुरूष चूंकि राजा था
रानियां सुन्दर और जवान ही चाहिए

देखते ही देखते
राजमहल के कितने ही कमरों में
स्त्रियों की सिसकियां दम तोड़ने लगीं

राजमहल के कितने ही कमरे
कबाड़खाने में बदल गये
और रानियां कबाड़ में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमें याद रखना चाहिए
रानियां
स्त्री थीं !

22.

पुरूष ने कहा
चलो घर घर खेलते हैं

स्त्री बोली
हां....हां, चलो

घर–घर खेलते जब मन भर गया
तो पुरूष
ठोकर मारकर
घर से बाहर निकल गया

स्त्री खड़ी है
उजड़े हुए घर की दहलीज पर
ठगी–सी
सदियों से !

23.

पुरूष के हाथो स्त्री
कुछ इस तरह मारी गई–

युद्ध में जीती गई
जुए में हारी गई

24.

स्त्री बोली
मुझे कुछ अधिकार चाहिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरूष बहुत नाराज हुआ

स्त्री बोली
मुझे कुछ आजादी चाहिए

पुरूष ने कहा
पूरी तरह आजाद हो
तलाक. . . .तलाक. . . .तलाक !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्त्री

चित्रकार का जीवन रंगहीन था

मगर उसके पास रंग थे ढेर सारे
कूची थी
कैनवास भी था

रंगहीन जीवन से ऊबकर
लगभग डरकर
चित्रकार ने
एक स्त्री की तस्वीर बनायी
और कैनवास को
भर दिया रंगों से
रंगों के आकर्षण से
आकर्षण इन्द्रधनुषी !

इतने सारे रंग देख
जीवन में आने की इच्छा हुई स्त्री की

आई भी
मगर दुर्भाग्य
सारे इन्द्रधनुषी रंग
कैनवास में ही रह गये !!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीपल

स्त्री के सिर पर टोकरी थी
पुरूष के कंधे पर फावड़ा–कुदाल

दोनों जिस रास्ते से जा रहे थे
पास ही पीपल का पेड़ था

पीपल का पेड़
उन्हें पुकार रहा था
बुला रहा था
अपनी छाया में
कुछ देर सुस्ताने के लिये

कहना मुश्किल है
उन्होंने पुकार सुनी या नहीं
बस!
दोनों आगे बढ़ गये
पीपल को
कातर व उदास निगाहों से देखते

इस घटना के बाद
कभी किसी ने नहीं सुनी
पीपल की आवाज

या ये भी हो सकता है
कभी किसी को पुकारा ही नहीं
पीपल ने !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गठरी

पुरूष की तमाम प्रताड़नाओं के बाद भी
बची हुई थी स्त्रियां
और दुनिया की अंतिम स्त्रियां नहीं थीं

ऐसी ही बची हुई स्त्रियों में से
एक स्त्री के पास
दुख की गठरी थी
दूसरी के पास
सुख की

दोनों एक दूसरे को
जानती भी नहीं थीं पहले से
इसे संयोग ही कहें
कि राह चलते
टकरा गईं आपस में
पेड़ के नीचे

स्त्रियां थीं
तो बतियाने का मन हुआ उनका
वे बतियाने लगीं आपस में
परिचय बढ़ा
तो एक अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुख की गठरी खोल दी
दूसरी ने सुख की

जब वे उठकर जाने लगीं
तो दुख की गठरी हल्की हो चुकी थी
और सुख की गठरी भारी

आपको बेहद आश्चर्य होगा जानकर
जब वे दोनों लौटीं
अपने अपने रास्ते
बेहद खुश थीं
खुश खुश लौटीं !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खण्ड- दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रकार

जीवन के सारे रंग थे उनकी तस्वीरों में
जीवन का सारा सौन्दर्य
प्रकृति और मनुष्य के सारे रूप
सारे संबन्ध
संबन्धों की सैकड़ों परिभाषाएं

प्रशंसा और प्रशस्तियों से घिरा
मशहूर चित्रकार वह
आत्ममुग्ध
गर्दन अकड़ाए निहारता अपने चित्रों को
देखता प्रशंसाओं और प्रशस्तियों को
भर जाता अभिमान से
चमकने लगतीं उसकी आखें
खिल खिल जाता चेहरा

मशहूर चित्रकार वह
जिस स्त्री से करता था प्रेम
बनाया एक दिन उसी का चित्र
और हो गया मुग्ध
मुग्धता में बेसुध

हादसा यह हुआ
कि चित्र की स्त्री पर मुग्ध एक चित्रकार
भूल ही गया
जीवन की स्त्री को !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funded by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसा पहली बार हुआ

वह लड़की पर कविता लिखना चाहता था
लिख गया नदी पर

वह लड़के पर कविता लिखना चाहता था
लिख गया पेड़ पर

उसने आगे और लिखा
तो लड़की नदी में बदल गई
और लड़का पेड़ में

ऐसा पहली बार हुआ

आखिर ऐसा हुआ क्यों
वह सोचने लगा
सोचते सोचते
अचानक ख्याल आया उसे
कि वह लड़की
जिस पर कविता लिखना चाहता था वह
नदी में नहा रही थी

वह लड़का करीब ही खड़ा था
पेड़ के नीचे
जिस पर कविता लिखना चाहता था वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह फिर सोचने लगा
यदि ऐसा हुआ तो क्यों
क्यों आखिर ?

यदि ऐसा हो गया कविता में
तो यकीनन कोई न कोई संबंध होगा
लड़की–नदी–पेड़–लड़के में

जब उसे लगा कि वह
कुछ भी नहीं सोच सकता आगे
तो उसने कलम रख देना चाहा

बस यही वक्त था
जब लड़की
नदी से निकल कर
लड़के के साथ चली गई
ताकती रह गई नदी
देखता रह गया पेड़–

ऐसा पहली बार हुआ !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by MoE-IKS-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमिकाएं

प्रेमिकाएं
आंखों में नहीं
दिल में छुपाकर रखती हैं स्वप्न

होंठों पर नहीं
आंखों में होती हैं
प्रेमिकाओं की हंसी

प्रेमिकाएं नहीं जानतीं
जिस खुश्बू की प्रशंसा करती हैं
किसी फूल से नहीं
उनके बदन से आती है

प्रेमिकाएं
प्रेम पत्र को ऐसे बांचती हैं
जैसे वेद मंत्र
प्रेमी की तस्वीर
किसी एलबम में नहीं
पुस्तक में दबाकर रखती हैं

अपने घर की
खिड़कियों में ढ़लती हैं
प्रेमिकाओं की शामें
प्रेमिकाएं लोगों से नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने आप से डरती हैं
डरती हैं अपने प्रेम से !

धत्त तेरे की
इस आधुनिक समय में
किस जमाने की बात कर रहा हूं

माफ कीजिएगा
प्रेमिकाओं को लेकर कही गई
तमाम बातें
निराधार हैं
बेबुनियाद हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम करने वाली लड़की

एलबम में लगी तस्वीर के नीचे
छुपाकर रखती होगी कोई तस्वीर
तह किये हुए कपड़ों के बीच
पुराने पीले कागज बतौर प्रेम पत्र

रूमाल में टांकती होगी
कोई खूबसूरत फूल
या फिर किसी के नाम का
पहला अक्षर

खुशी और उदासी के
तमाम रंगों से सजते होंगे
उसके ख्वाब

मन का एक कोना ऐसा भी होगा
जिसमें छुपाकर रखती होगी
अपने सारे स्वप्न
और झांकने से डरती होगी

अपनी किताब के पन्नों पर
लिख रखती होगी
किसी मशहूर शायर की पंक्तियां

सिसकते साजों का संगीत
बहलाता होगा उसका मन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुनश्च : प्रेम करने वाली लड़की
अपने प्रेम के
सार्वजनिक होने से डरती है

यदि ऐसा हो जाय
तो अपने प्रेम के पक्ष में
सबसे पहले बगावत करती है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फूल खुश्बू चांद नहीं होना मुझे

फूल के बारे में पूछी
तो कह दिया
तुम ही तो हो फूल

खुश्बू के बारे में पूछी
तो कह दिया
तुम्हारे बदन से जो आती है

चांद के बारे में पूछी
तो कह दिया
तुम्हारा चेहरा

खुश नहीं हुई
उदास हो गई वह
सुनकर अपनी तारीफ–

अगर फूल हूं
तो तोड़ ले जाएगा कोई मुझे
खुश्बू हूं अगर
तो बिखर जाऊंगी
यदि हूं चांद
तो रहना पड़ेगा
आजीवन तुमसे दूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोने लगी
लिपटकर मुझसे
कहने लगी
फूल खुश्बू चांद नहीं होना मुझे
ये सब होने से बेहतर है
कुछ और होना मंजूर
तुम्हारे पास
बहुत पास होने के लिये
आजीवन!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिसंवाद का माध्यम

चूड़ियां होती हैं रंगीन, पारदर्शी
जैसे लड़की के स्वप्न

चूड़ियां खनकती हैं
जैसे खिलखिलाती हैं लड़कियां

लड़की के नाजुक दिल के समान
नाजुक होती हैं चूड़ियां

लड़की नहीं
अक्सर चूड़ियां करती हैं
प्यार का इजहार
इंकार या इकरार

चूड़ियां होती हैं
लड़की और प्रेमी के मध्य
परिसंवाद का माध्यम
सबसे पहला माध्यम !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्यार के इस क्षण में तुम मुझे

प्यार के इस क्षण में तुम मुझे
ऐसे महसूसो
जैसे खुश्बू
ऐसे छुओ
जैसे फूल
ऐसे देखो
जैसे चांद
ऐसे बुनो
जैसे स्वप्न
ऐसे मानो
जैसे सच
ऐसे पढ़ो
जैसे शीर्षकहीन
कोई प्रेम कविता–

प्यार के इस क्षण में
तुम मुझे !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funded by Ministry of Education-2023-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी

कभी मैं आंगन हो जाता
और वह गौरैय्या

कभी वह मुंडेर हो जाती
और मैं कबूतर

कभी हम दोनों
दाना हो जाते
एक दूसरे के लिये

हां
मगर कभी
कभी कभी ही !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ इस तरह

हमारे जीवन में
प्रेम था कुछ इस तरह–

कभी छूने से पहले
खरगोश में बदल जाता मैं

कभी चखने से पहले
इमली में बदल जाती वह

कभी देखने से पहले
चांद में बदल जाता मैं

कभी चूमने से पहले
तितली में बदल जाती वह–

जीते / कुछ इसी तरह
करते हुए प्रेम
हम दोनों
और सोचते
सही गलत से परे
इसी तरह होना चाहिए
लोगों के जीवन में
प्रेम !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2020-21 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृश्य में चुंबन

दृश्य में चुंबन तो है
मगर प्रेमी युगल नहीं
दो मशीने हैं मानो

न आग है न, उत्तेजना
न प्यास है न, मिठास
न डर है न, शर्म
न बेचैनी है न, थरथराहट
न सांसें तेज है न, धड़कन बेकाबू
न भावनाओं का आवेग है
न नसों के फट जाने का अंदेशा
न होंठों से खून टपक पड़ने की आशंका

एक के होठों पर
दूसरे के होठों का
कैसा चुंबन है यह
कि लग रहा है
छपाई मशीन के
किसी पुर्जे पर रखा जा रहा हो
कोई दूसरा पुर्जा–

कि जैसे टकरा रहे हों
एक दूसरे से आहिस्ता
आग रहित दो मुलायम पत्थर !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठकर प्रेम करना

ज्वालामुखी के मुहाने पर
बैठे हुए थे हम
बैठे हुए थे हम
आग ताप और लावा के ठीक ऊपर
जहां ठंडक थी
थी नमी
हम बैठे हुए थे
तो प्रेम भी था वहां
हमारे दिल धड़क रहे थे
मगर खामोशी भी थी

हम गा रहे थे
अपने समय का गीत
अपने लिए
प्रेम करते हुए
जिसमें प्रेम ही था
और जिसे
हम ही सुन रहे थे

हमारे प्रेम में
वही आग थी
वही ताप
वही लावा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2023-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो ज्वालामुखी में
जिसके मुहाने पर
बैठे हुए थे हम

हम अपने भीतर की आग
ताप और लावा से परेशान थे
परेशान इसकदर कि बेचैन
बेचैन इतना
कि डर की हद तक

जितना डर ज्वालामुखी के
फट जाने से नहीं था
उससे कहीं ज्यादा डर
हमारे प्रेम से था दुनिया को

दुनिया हमें पागल करार देकर
जीवन से बहिष्कृत कर
इतिहास में ढकेल देना चाहती थी
हम इतिहास में नहीं
जीवन में रहना चाहते थे

ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठकर प्रेम करना
हमारा विद्रोह नहीं था साथियो
मगर माना जा रहा था
विद्रोह ही !

CC-0 Agamnigam Foundation. Digitized by eGangotri Education Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमसे प्रेम करते हुए- एक

प्रेम करने में
और प्रेम को बचाये रखने में
जोखिम है बहुत
और यह जोखिम उठाने के लिये
किया है मैंने तुमसे प्रेम

तुमसे प्रेम करना
सिर्फ तुमसे प्रेम करना नहीं है
इस दुनिया से भी प्रेम करना है

तुम्हारे लिये जीने का अर्थ
तुम्हारे लिये जीना तो है
इस दुनिया के लिये भी जीना है

इस दुनिया के लिये मरने का अर्थ
तुम्हारे लिये मरना
कतई नहीं है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमसे प्रेम करते हुए- दो

तुम्हारी सुन्दरता के समान
सुन्दर दुनिया का जो स्वप्न
मेरी आंखों में बदलता है करवट
तुम्हारी आंखों में भी देखना चाहता हूं
तुमसे प्रेम करते हुए

तुमसे प्रेम करते हुए
तुम्हारी सुन्दरता के समान
सुन्दर दुनिया चाहता हूं मैं
चाहता हूं मैं
भोली, नेक, अच्छी, छल रहित,
सादा और समझदार दुनिया
जीवन और खुशियों से भरी हुई
और ऐसी दुनिया को पाने के लिये
गरज कि बनाने के लिये
जहां प्रेम करने की आजादी हो
करना चाहता हूं संघर्ष

मेरे लिये
प्रेम का अर्थ तुमसे तो है
लेकिन 'तुम' का मतलब
एक ऐसे साथी से है
जो इस संघर्ष में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो मेरे साथ
बराबर का भागीदार
जिसके कदम
डगमगाये मत कभी
विचारों और संघर्षों की
जमीन पर चलते हुए !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Digitized by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमसे प्रेम करते हुए- तीन

इस मायावी और क्रूर दुनिया में
हमारे समय में प्रेम का अर्थ संघर्ष हो
हमारे समय में प्रेम का अर्थ प्रतिरोध हो
हमारे समय में प्रेम का अर्थ
दुनिया को बदलने का स्वप्न हो
हमारे समय में प्रेम का अर्थ मुक्ति हो
हमारे समय में प्रेम का अर्थ
सिर्फ प्रेम न हो
हो तो प्रेम का मतलब वह संबंध न हो
जो इन दिनों पनप रहा है
खास तबके के युवक–युवतियों के बीच

युवाओं में प्रेम को लेकर
फैलाया जा रहा है जो भ्रम
वह न हो
वह तो कतई न हो
जिस अर्थ का
बाजार कर रहा है
प्रचार

प्रेम बिल्कुल भी नहीं है
वस्तु, देह, अस्थायी जरूरत
इस्तेमाल या व्यापार !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुमसे प्रेम करते हुए- चार

प्रेम करते हुए
इस दुनिया को बदलने का स्वप्न
हर किसी की आंखों में नहीं तैरता
जब तैर रहा है हमारी आंखों में
तो पहले वैसी दुनिया बनायें
फिर करें प्रेम
नये सिरे से
अपने लिये

मुझसे प्रेम करते हुए
तुम्हें जानना चाहिए
जो प्रेम नहीं कर सकता
अपनी दुनिया से
वह नहीं कर सकता
किसी से भी प्रेम !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे बताना चाहता था मैं

श्यामवर्णी देह से ज्यादा
अनार के दानों के समान
बिखरने वाली
उसकी हंसी की
गिरफ्त में था मैं
बिखरा हुआ था
उसके चेहरे के नमक की मिठास के आसपास

वह किसी जिद्द के पीछे भाग रही थी अविराम
दौड़ रही थी किसी स्वप्न के पीछे बेसुध
इस भागने–दौड़ने में
कुछ छूट रहा है तुमसे
उसे बताना चाहता था मैं

उसे बताना चाहता था
मगर मैं जहां खड़ा था
वहां से बहुत आगे निकल चुकी थी वह
अपनी जिद्द और स्वप्न के पीछे
भागती
दौड़ती

उसे बताना चाहता था मैं
प्रेम छूटा जा रहा है तुमसे !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज- एक

एक दिन एक मीठी आवाज
कुछ सहमी सी
कुछ थरथराती सी
पूछती है मुझसे
मेरे फोन पर–
क्या तुम मुझे पहचानते हो ?

पहचानता था मैं
उस आवाज को
विगत बीस वर्षों का
फासला तय कर पहुंची थी मुझ तक
मुझे चौकाती

उस आवाज का रंग गुलाबी था
गुलाबी रंग में सांवला चेहरा
सांवले चेहरे पर दूध सी निर्मल हंसी थी
सफेद निर्दोष अबोध
और उस हंसी में कोई जादू था

वह इकलौती आवाज थी दुनिया की
जिसे पहचानता था मैं
और जिसमें घुल जाने का
स्वप्न देखा करता था कभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Fin Digitized by eGangotri 2025 - UGC Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने कहा नहीं
मैं पहचानता हूं तुम्हें
मैंने यह भी नहीं बताया
तुम वही आवाज हो
जो बैठी हुई है मेरी आत्मा में
विगत कई वर्षों से
किसी नटखट और शरारती बच्चे के समान
अपनी तमाम मासूमियत और भोलेपन के साथ
मुझे तंग करती
पूछती–
क्या तुम मुझे पहचानते हो ! ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज- दो

सर्दी के मौसम की एक दोपहरी
जबकि धूप तब रेशमी थी
थी नटखट गुनगुनी मुलायम
एक कांपती सी आवाज मुझे चौकाती है
मेरे फोन पर

सुखद आश्चर्य से भर जाता हूं मैं–
वह मेरी कल्पनाओं की आवाज थी
मेरे देखे हुए सपनों की आवाज
बहुत पहले कहीं खो गई आवाज थी वह
जिसके साथ जीने की
इच्छा पल रही थी मेरे मन में

उस आवाज से बहुत दूर था मैं
मगर वह मेरे इतने पास थी
कि उसकी गर्म सांसें
गिर रही थीं मेरे गाल पर !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज- तीन

मेरा दामन थामो
और चले आओ मेरे पास
गर पाना चाहते हो मुझे
मुझसे कहती थी एक आवाज
बरसों पहले

उस आवाज का दामन थामें
उसी के बुने धागे पर
चल रहा हूं बरसों से अविराम

फासला उतना ही है
जितना
बरसों पहले

थक तो नहीं गये
हार तो नहीं जाओगे–

आवाज वह
अब भी पूछ रही है मुझसे–
मर तो नहीं गई
मुझ तक पहुंचने की
तुम्हारी इच्छा !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किताब से निकलकर प्रेम कहानी

किताब से निकलकर एक प्रेम कहानी ने
ले ली अपनी गिरफ्त में
मेरे शहर की एक भोली–भाली लड़की को
आ घुसी उसके कोमल मन में
जीवन में मचा दी हलचल

लड़की ने बिल्कुल वैसा ही प्रेम किया
जैसे किताब की प्रेम कहानी की नायिका ने
लड़की के वही आदर्श
वही आकांक्षा वही स्वप्न
जीवन और प्रेम को लेकर वही आस्था
वही लालसा वही ललक

संकट और संघर्ष के बारे में
ठीक–ठाक कुछ कह पाना मुश्किल है

कहानी से बाहर प्रेम
और जीवन में अक्सर
जोखिम कुछ ज्यादा ही होता है

लड़की ने जिससे प्रेम किया
वह वैसा नहीं निकला
जैसा प्रेम कहानी का नायक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस तरह एक लड़की का प्रेम
देखते ही देखते कहानी होकर रह गया
इस तरह एक प्रेम कहानी
जीवन्त होने से रह गई
इस तरह प्रेम
कहानी में ही होकर रह गया दफ्न !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सजा

मैंने प्रेम किया
और मुझे वंचित कर दिया गया
पृथ्वी के सुख से
भेज दिया गया स्वर्ग

मेरे लिये
यह सबसे बड़ी सजा थी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवाहित पुरूष से प्रेम करने वाली लड़की

सब कुछ अद्‌भुत, अलौकिक, असाधारण था उसके लिए
एक विवाहित पुरूष से प्रेम करने लगी थी वह

एक विवाहित पुरूष
जिसकी सीधी–सादी, भोली–भाली घरेलू पत्नी थी
और एक छोटी सी गोल मटोल बातूनी बच्ची

जो पिछले दिनों से ज्यादा
असहाय पा रहा था स्वंय को
अगले दिनों के जीवन संघर्ष में

अपने परिवार को
वह खुश होकर जिम्मेदारी की तरह नहीं
बल्कि बोझ के समान ढो रहा था
जी तोड़ मेहनत के बाद भी
नहीं जुटा पा रहा था
जीवन के लिए जरूरी चीजें

ऐसा भी नहीं कि मुहल्ले में
अविवाहित लड़के नहीं थे
या फिर
हो गये थे लापता
सारे नौकरी पेशा नवयुवक !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुहल्ला ऐसा था
कि पाश्चात्य संस्कृति में रंगे
भारतीय फिल्मों की फुहड़ता से प्रभावित
चिकने चुपड़े, स्वांग रचने वाले लड़के
मिल ही जाते राह चलते
और घूरते भी ओझल होने तक

प्रेम का ऐसा कोई
सर्वमान्य सिद्धांत तो है नहीं
कि प्रेम
अविवाहित से ही हो
या किया जाय
या फिर विवाहित पुरूष होते ही नहीं
प्रेम करने के योग्य

निश्तेज चेहरे
और दुर्बल काया में
ऐसा क्या दिख गया उसे
कैसा था उसका सौन्दर्य बोध
प्रेम को लेकर
ऐसा क्या था उसमें
कि प्रेम करने लगी थी
एक ऐसे पुरूष से
जो विवाहित था
और जिसकी जान
अपनी पत्नी और बच्ची में बसती थी

कुछ न कुछ तो रहा होगा उसमें
जो किसी और में नहीं
या फिर मारी गई थी मति उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या फिर हमारे पास नहीं था
उसका मन
नहीं थी उसकी आंखें
उसकी दृष्टि

जैसा कि आप जानते हैं
प्रेम को लोगों से छुपाकर रखने का रिवाज है
सो छुपाती रही वह भी
और जैसा कि आप जानते हैं
प्रेम को लाख छुपाओ
छुपता ही नहीं
सो नहीं छुपा उसका भी प्रेम
हो गया जग जाहिर

जैसा कि होता आया है
प्रेम के मामले में
सारे मुहल्ले में ढिंढोरा पिटने के बाद ही
पता चला परिवार वालों को–

रिश्तेदार करने लगे थू थू
बहनों को लगा घर से बाहर निकलना हो गया दूभर
भाईयों को लगा
कहीं के भी न रहे हम
मां बाप को लगा
जीते जी मर गये
कहीं की न छोड़ी कलमुंही

धर्मशास्त्र के सारे उपदेश
चील बनकर मंडराने लगे थे
उसके चारो ओर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़कियों और स्त्रियों के लिए
बनी हुई आचार संहिताओं के
खुलने लगे थे पन्ने
और चीखने लगे थे
अपनी विशिष्ट और डरावनी आवाज में–

विवाहित पुरूष से प्रेम करना
असामाजिक है
अमर्यादित है
पाप है पाप

समाज व परिवार के
तमाम दृश्य–अदृश्य प्रतिबंधों
मर्यादाओं और अंकुशों में जकड़ी हुई
इन सबसे बे–परवाह
इन सबको ठेंगे पर रखती
मारती ठोकर
प्रेम कर रही थी वह
एक विवाहित पुरूष से !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम

सृष्टि की रचना में
जो कुछ भी था प्रेम था
धर्मग्रंथों से ज्यादा पवित्र
संस्कृत के श्लोकों से ज्यादा गूढ़
रहस्यमय
किन्तु सरल सरस सुकोमल
वेदों की भाषा से ज्यादा चमकदार

दुनिया के इतिहास में
सबसे ज्यादा पुरातन है
प्रेम का इतिहास
निर्विवाद
सर्वमान्य
किन्तु जो लिखा नहीं गया

आकाश भर स्याही से
यदि लिखना चाहें प्रेम
तो पड़ जाए कम
पृथ्वी भर कागज

दुनिया भर के तमाम चूहे मिलकर
इसे कुतरने में रहे नाकाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीमकों का पूरा हुजूम लगा रहा सदियों
लेकिन चाट नहीं पाया
इस छोटे से शब्द को

प्रलय के बाद
तब जबकि सब कुछ हो जायेगा नष्ट
जो कुछ भी बचा रह जाएगा सृष्टि में
वह होगा–

प्रेम
सृष्टि की पुनःरचना
पुनः सृजन के लिये !

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Education Bank Jammu

कविता में ढलती है। वे तफरीह करने और आदिवासी स्त्रियों से दिल्लगी करने छत्तीसगढ़ नहीं गए हैं। उनकी 'पुरुष-दृष्टि' के लिए बसंत के दिनों की 'सबसे प्यारी खुश्बू है पत्नी' अपसंकृति के विरुद्ध नैतिक और मानवीय का यह प्रतिरोध उनकी स्थानीयता को व्यापक संदर्भ प्रदान करती है। वे छत्तीसगढ़ के जीवन और प्रकृति में रचे-बसे हैं। इसलिए स्थानीयता उनके लिए फैशन नहीं, संवेदना का हिस्सा है। लंबी कविताओं में आने वाले चरित्र और घटनाएँ इस स्थानीयता को उत्तर-आधुनिक रणनीति के बजाय मुक्ति और समता के मानवीय स्वप्न बनाती हैं। वे बिल्कुल नापसंद करते हैं कि "पुरुष अपने सपनों को दबाए रहें और स्त्री अपने रंगों को।"

मुक्ति और समता के मूल्यों की खोज में वे स्मृतियों में भी जाते हैं लेकिन स्मृतियाँ अतीत-राग का मोहक स्वप्न नहीं, श्रम का आधार प्रस्तावित करती हैं। मतलब यह कि संबंधों से बाहर न कोई अनुभव है, न कविता। यह जागरुकता कमलेश्वर साहू के यहाँ कला की खिड़की खोलते हुए पूरा जीवन ही खोल देने का प्रयत्न करती है, इसीलिए उनकी कविताएँ अपने पाठक से भरोसे का संबंध जोड़ लेती हैं और आने वाले समय के लिए आश्वस्त करती हैं।

डॉ. अजय तिवारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Education Bantalab Jammu

नाम : कमलेश्वर साहू

जन्म : 26.11.1965

प्रकाशन : देश की लगभग सभी महत्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित। आकाशवाणी से प्रसारित। कविताओं का अंग्रजी, पंजाबी व बांग्ला में अनुवाद।

संग्रह : 1. बिरजू रिक्शावाला (गज़ल संग्रह)
2. यदि लिखने को कहा जाय (कविता संग्रह)
3. पानी का पता पूछ रही थी मछली (कविता संग्रह)

अन्य : नाटक व नाटकों के लिए गीत/जनगीत लेखन

सम्मान : सृजनगाथा सम्मान 2009

संप्रति : छत्तीसगढ़ सशस्त्र पुलिस में कार्यरत

संपर्क : 702, साकेत कालोनी, वार्ड–57, कातुलबोड़,
पो.आ.–एस.ए.एफ.लाइन, जिला–दुर्ग (छ.ग.) 490022,
मो. 09424109943, 07587041435

ईमेल : kamleshwarsahu26@gmail.com

यश

यश पब्लिकेशंस

1/10753 सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

ISBN : 978-93-81130-02-5

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant